**MAA OMWATI DEGREE COLLEGE, HASSANPUR**

## *EXAMINATION NOTES*

**MR.CHANDRA SHEKHAR**

**UG CLASSES ( BA,B.SC,B.COM,BCA )**

**3RD SEM**

**SUBJECT:- ART AND POLITICS**

# UNIT-1

**यह रहा दृश्य कला (Visual Arts) का एक संक्षिप्त परिचय हिंदी में:**

**दृश्य कला का परिचय**
**दृश्य कला (Visual Arts) उन कलाओं को कहा जाता है जिन्हें आँखों से देखा जा सकता है और जिनकी अभिव्यक्ति मुख्य रूप से दृश्य माध्यमों के द्वारा होती है। यह कला का एक व्यापक क्षेत्र है जिसमें चित्रकला (Painting), मूर्तिकला (Sculpture), छायाचित्रण (Photography), छपाई कला (Printmaking), वास्तुकला (Architecture), फिल्म निर्माण, डिजाइन (Design) और डिजिटल कला (Digital Art) जैसे अनेक रूप शामिल हैं।**

**दृश्य कला का मुख्य उद्देश्य विचारों, भावनाओं और अनुभवों को रंग, रूप, रेखा और संरचना के माध्यम से अभिव्यक्त करना होता है। यह कला मानव सभ्यता के विकास के साथ-साथ विकसित होती आई है और समाज, संस्कृति तथा इतिहास को समझने का एक महत्वपूर्ण माध्यम भी है।**

**दृश्य कला के प्रमुख रूप:**

**चित्रकला (Painting)**

**मूर्तिकला (Sculpture)**

**डिज़ाइन कला (Graphic & Fashion Design)**

**फोटोग्राफी (Photography)**

**वास्तुकला (Architecture)**

**फिल्म और वीडियो कला (Film & Video Art)**

**महत्व:**
**दृश्य कला न केवल सौंदर्य की अनुभूति कराती है, बल्कि यह सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक विचारों को भी प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम है। यह मानव रचनात्मकता की अभिव्यक्ति का एक सशक्त रूप है।**

**कला के तत्वों और सिद्धांतों का परिचय (Introduction to Elements and Principles of Art in Hindi)**
**कला के तत्व (Elements of Art) का अर्थ:**
**कला के तत्व वे बुनियादी घटक (Basic components) हैं जिनका उपयोग किसी भी कलाकृति को बनाने के लिए किया जाता है। ये ठीक वैसे ही हैं जैसे किसी भाषा में शब्द और वाक्य होते हैं। कलाकार इन तत्वों का उपयोग करके किसी दृश्य को आकर्षक, अभिव्यंजक और प्रभावशाली बनाते हैं।**

**प्रमुख 7 कला तत्व:**
**रेखा (Line) – एक बिंदु की गति, जो दिशा और आकृति दर्शाती है।**

**आकार (Shape) – दो या अधिक रेखाओं से बना समतल क्षेत्र।**

**आकार या रूप (Form) – त्रिविमीय (3D) वस्तु जैसे घन, गोला आदि।**

**रंग (Color) – प्रकाश का प्रभाव जो भावनाएं उत्पन्न करता है।**

**मूल्य या टोन (Value) – रंग या छाया की गहराई (गहरा या हल्का)।**

**पृष्ठभूमि या बनावट (Texture) – किसी सतह के स्पर्श या दृश्य गुण।**

**स्थान (Space) – किसी कलाकृति में वस्तुओं के बीच की दूरी या गहराई।**

**🔹 कला के सिद्धांत (Principles of Art) का अर्थ:**
**कला के सिद्धांत वे नियम या तरीके हैं जिनके अनुसार कला के तत्वों को व्यवस्थित किया जाता है ताकि रचना में संतुलन, सुंदरता और अर्थपूर्णता लाई जा सके।**

**🔹 प्रमुख 7 कला सिद्धांत:**
**संतुलन (Balance) – कलाकृति में सभी हिस्सों का उचित वितरण।**

**जोर या बल (Emphasis) – किसी एक हिस्से को प्रमुख बनाना।**

**एकता (Unity) – सभी तत्वों का मिलकर एकता में कार्य करना।**

**विपरीतता (Contrast) – हल्का–गहरा, बड़ा–छोटा जैसे भिन्न तत्वों का प्रयोग।**

**गति (Movement) – जिससे दर्शक की नजर कलाकृति में घूमती है।**

**ताल या लय (Rhythm) – तत्वों का दोहराव या पैटर्न।**

**प्रोपोर्शन (Proportion) – वस्तुओं के आकार और अनुपात का संतुलन।**

**🔹 निष्कर्ष:**
**कला के तत्व रचना के निर्माण की नींव हैं, और कला के सिद्धांत उस रचना को सुंदर, सुसंगत और अर्थपूर्ण बनाने के नियम। एक सफल कलाकृति इन्हीं दोनों के संतुलित प्रयोग से बनती है।**

# UNIT-2

**□ □कला और राजनीति के बीच संबंध (Relation Between Art and Politics in Hindi)**

**□ परिचय (Introduction):**

**कला और राजनीति, पहली नजर में दो अलग-अलग क्षेत्र लग सकते हैं – एक रचनात्मकता का क्षेत्र और दूसरा सत्ता और नीति का। लेकिन जब गहराई से देखा जाए, तो पता चलता है कि कला और राजनीति का आपस में गहरा और ऐतिहासिक संबंध है। कला, समाज का दर्पण होती है और राजनीति उस समाज को संचालित करने की प्रक्रिया। इस प्रकार, कला राजनीतिक विचारों को व्यक्त करने, प्रचार करने और विरोध करने का एक सशक्त माध्यम बन जाती है।**

**□□ राजनीति में कला की भूमिका:**

**राजनीतिक संदेशों का प्रचार:**

**चित्रकला, पोस्टर, नाटक, गीत और फिल्मों के माध्यम से राजनीतिक विचारों और नीतियों को जनता तक पहुँचाया गया है।**

**उदाहरण: भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में कई गीत और चित्र लोगों को जागरूक करने के लिए उपयोग किए गए।**

**विरोध और आंदोलन का माध्यम:**

**जब अन्य माध्यमों से आवाज दबाई जाती है, तब कलाकार अपनी कला के ज़रिए विरोध प्रकट करते हैं।**

**उदाहरण: चित्रों, कविता, रंगमंच और स्ट्रीट आर्ट के माध्यम से तानाशाही या अन्याय के खिलाफ आवाज उठाई जाती है।**

**राजनीतिक प्रचार (Propaganda):**

**राजनीतिक दल और सरकारें अपने एजेंडा को बढ़ावा देने के लिए कला का उपयोग करती हैं।**

**उदाहरण: हिटलर के शासन में नाजी जर्मनी में कला का इस्तेमाल नस्लीय श्रेष्ठता का प्रचार करने के लिए किया गया।**

**लोकमत निर्माण में योगदान:**

**कला जन भावनाओं को प्रभावित करती है और विचारों को जन्म देती है। इस तरह यह जनता की राय को आकार देने में सहायता करती है।**

**ऐतिहासिक उदाहरण:**

**भारतीय स्वतंत्रता संग्राम –**

**अबुल कलाम आज़ाद, रवींद्रनाथ टैगोर जैसे लोगों ने लेखन और कला के माध्यम से राजनीतिक विचार फैलाए।**

**"वंदे मातरम्", "जन गण मन" जैसे गीत राजनीतिक चेतना का हिस्सा बने।**

**रूसी क्रांति (1917) –**

**क्रांतिकारी पोस्टर और चित्रकला के माध्यम से मजदूरों और किसानों को प्रेरित किया गया।**

**दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद (Apartheid) –**

**संगीत, कविता और नाटक के माध्यम से विरोध किया गया।**

**कलाकारों ने नस्लीय भेदभाव के खिलाफ आवाज उठाई।**

**फ्रांस की क्रांति और पेंटिंग्स –**

**चित्रों के माध्यम से लोगों की पीड़ा और संघर्ष को दर्शाया गया।**

**कला के रूप जिनका राजनीति से संबंध रहा है:**

| कला का रूप | राजनीतिक उपयोग |
|---|---|
| चित्रकला (Painting) | पोस्टर, व्यंग्य चित्रों द्वारा राजनीतिक विचारों की अभिव्यक्ति |
| रंगमंच (Theatre) | नाटक और नुक्कड़ नाटकों से सामाजिक–राजनीतिक मुद्दों पर चर्चा |
| साहित्य (Literature) | कविता, कहानी, उपन्यास के ज़रिए राजनीतिक सिद्धांत और विरोध |
| फिल्म (Cinema) | राजनीतिक विचारधारा और सामाजिक चेतना को जन-जन तक पहुँचाना |
| संगीत (Music) | विरोध के गीत और प्रेरणादायक संगीत का प्रभाव |

**कला और राजनीति के बीच संबंध की विशेषताएं:**

**कला राजनीति को चुनौती भी देती है और समर्थन भी।**

**कला जनता की आवाज बन सकती है जब लोकतंत्र खतरे में हो।**

**राजनीति कला को नियंत्रित करने की कोशिश भी करती है (जैसे सेंसरशिप)।**

**कला से सामाजिक बदलाव की शुरुआत हो सकती है।**

**निष्कर्ष (Conclusion):**

**कला और राजनीति के बीच संबंध बहुआयामी, जटिल और प्रभावशाली है। कला न केवल राजनीतिक विचारों को अभिव्यक्त करने का माध्यम है, बल्कि यह सामाजिक परिवर्तन की शुरुआत भी कर सकती है। जब राजनीति अन्याय करती है, तो कला उसके खिलाफ खड़ी हो जाती है। और जब समाज को दिशा की जरूरत होती है, तब कला प्रेरणा बनती है।**

**कला और राजनीति के बीच गहरा संबंध है। कला, राजनीति को प्रतिबिंबित कर सकती है, उसे चुनौती दे सकती है, या फिर उसे प्रभावित कर सकती है। यह संबंध ऐतिहासिक रहा है और विभिन्न रूपों में प्रकट होता है, जैसे कि कला के माध्यम से राजनीतिक संदेशों को व्यक्त करना, कला को राजनीतिक आंदोलन के समर्थन में उपयोग करना, या कला को सत्ता के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल करना।**
**कला और राजनीति के बीच संबंध के कुछ पहलू:**
**कला का राजनीतिकरण:**
**कला को अक्सर राजनीतिक विचारधाराओं या आंदोलनों को बढ़ावा देने के लिए इस्तेमाल किया जाता है। उदाहरण के लिए, 20वीं सदी में, कई कलाकारों ने फासीवाद और साम्यवाद जैसे राजनीतिक आंदोलनों के समर्थन में कला का निर्माण किया।**
**राजनीति का कला पर प्रभाव:**
**राजनीति कला को प्रभावित कर सकती है, चाहे वह सेंसरशिप, संरक्षण, या कला के लिए धन के माध्यम से हो।**
**कला का राजनीतिक प्रभाव:**
**कला में राजनीतिक संदेशों को व्यक्त करने की क्षमता होती है, जो सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित कर सकती है। उदाहरण के लिए, कला का उपयोग अक्सर विरोध प्रदर्शनों और आंदोलनों में किया जाता है।**
**कला और शक्ति:**
**कला को शक्ति के प्रतीक के रूप में भी इस्तेमाल किया जा सकता है, जैसे कि स्मारकों और सार्वजनिक कला के माध्यम से।**
**कला और पहचान:**

कला संस्कृति और पहचान को व्यक्त करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है, और इसका उपयोग राजनीतिक पहचान और संघर्षों को व्यक्त करने के लिए भी किया जा सकता है।

कुछ उदाहरण:

प्राचीन कला:

प्राचीन मिस्र और रोम में, कला का उपयोग शासकों की शक्ति और महिमा को प्रदर्शित करने के लिए किया जाता था।

मध्ययुगीन कला:

मध्ययुगीन कला में, धार्मिक विषयों को चित्रित करने के लिए कला का उपयोग किया जाता था, जो चर्च और धर्म की शक्ति को दर्शाती थी।

आधुनिक कला:

20वीं सदी में, कला का उपयोग राजनीतिक आंदोलनों, जैसे कि नारीवाद और नागरिक अधिकारों के आंदोलन को बढ़ावा देने के लिए किया गया।

समकालीन कला:

आज, कला का उपयोग जलवायु परिवर्तन, सामाजिक न्याय, और अन्य महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करने के लिए किया जाता है।

निष्कर्ष:

कला और राजनीति का संबंध जटिल और बहुआयामी है। कला राजनीतिक संदेशों को व्यक्त करने, राजनीतिक आंदोलनों को बढ़ावा देने, और सत्ता के प्रतीकों के रूप में काम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

## Company Painting और Bengal School में 'The Other' की रचना और निषेध
## (Crafting and Averting ‘The Other’ in Company Painting and Bengal School of Art – in Hindi)

### भूमिका (Introduction):

कला इतिहास में "The Other" एक ऐसा सामाजिक, सांस्कृतिक या राजनीतिक दृष्टिकोण है जिसके तहत किसी समुदाय, वर्ग या सभ्यता को "अलग", "विदेशी" या "हीन" के रूप में चित्रित किया जाता है। यह उपनिवेशवाद, संस्कृति, पहचान और शक्ति की राजनीति से जुड़ा हुआ विषय है।

भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान दो प्रमुख कलात्मक परंपराएं उभरीं –

**Company Painting (कंपनी शैली की चित्रकला)**

**Bengal School of Art (बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट)**

**इन दोनों धाराओं ने "The Other" को अलग-अलग तरीके से गढ़ा (craft) और नकारा (avert)। यह विश्लेषण इन्हीं दो धाराओं में "The Other" के स्थान को समझने का प्रयास है।**

**1. Company Painting में 'The Other' की रचना (Crafting 'The Other')**

**Company Painting क्या थी?**

**18वीं–19वीं शताब्दी में ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारियों ने स्थानीय भारतीय कलाकारों को अपने जीवन, संस्कृति, वन्य जीव, स्थापत्य और सामाजिक दृश्यों को चित्रित करने का निर्देश दिया। यह शैली पारंपरिक मुग़ल, राजस्थानी और यूरोपीय शैली का मिश्रण थी।**

**'The Other' की रचना कैसे हुई?**

**ब्रिटिश नज़रिया हावी था: इन चित्रों में भारत को एक "रहस्यमयी", "असभ्य" और "अति-लोकप्रिय" स्थान के रूप में प्रस्तुत किया गया, ताकि ब्रिटिश श्रेष्ठता को दर्शाया जा सके।**

**भारतीय लोग 'दृश्य वस्तु' बन गए: चित्रों में भारतीयों को "अवलोकन योग्य" प्राणी की तरह दर्शाया गया – जैसे मजदूर, साधु, नर्तक, दास आदि।**

**औपनिवेशिक सत्ता का चित्रण: ब्रिटिश अधिकारियों को सफाई, अनुशासन और व्यवस्था के प्रतीक के रूप में दिखाया गया जबकि भारत को भीड़, अराजकता और अंधविश्वास से ग्रस्त।**

**भारत को 'अन्य' के रूप में चित्रित करना: ये चित्र भारत को पश्चिम के "सभ्य" समाज के विपरीत दिखाते थे। यह सांस्कृतिक "दूसरेपन" को पुष्ट करता था।**

**उदाहरण: 'Native Trades', 'Indian Sadhus', 'Bazaar Scenes' – इन चित्रों में भारतीय जीवन को विदेशी और "अलग" के रूप में दिखाया गया।**

**2. बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट में 'The Other' को नकारना (Averting 'The Other')**

**बंगाल स्कूल क्या था?**

**20वीं शताब्दी की शुरुआत में, अवनींद्रनाथ ठाकुर और अन्य कलाकारों ने भारतीय कला को औपनिवेशिक प्रभाव से मुक्त करने का प्रयास किया। यह आंदोलन सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और स्वदेशी चेतना से प्रेरित था।**

 'The Other' को नकारने का प्रयास:
भारतीयता की पुनर्स्थापना: बंगाल स्कूल ने मुग़ल, अजंता, राजपूत और जापानी कलाओं से प्रेरणा लेकर एक स्वदेशी कला रूप की खोज की।

ब्रिटिश शैली का बहिष्कार: तेल चित्रण, यथार्थवाद, छायांकन जैसी यूरोपीय तकनीकों की आलोचना की गई।

भारत को "स्व" के रूप में चित्रित करना: भारत अब "अन्य" नहीं, बल्कि "आत्म" का रूप बन गया। देवताओं, ऐतिहासिक पात्रों, आध्यात्मिकता और भारतीय प्रतीकों के माध्यम से भारत की गौरवमयी छवि प्रस्तुत की गई।

औपनिवेशिक "दूसरेपन" का विरोध: बंगाल स्कूल ने औपनिवेशिक कला के "विदेशी दृष्टिकोण" को नकारते हुए आत्मनिर्भर दृष्टिकोण अपनाया।

 उदाहरण: अवनींद्रनाथ ठाकुर की "भारत माता" – एक राष्ट्रमाता की छवि जिसने भारत को न केवल राजनीतिक रूप से, बल्कि सांस्कृतिक रूप से भी स्वतंत्र रूप में प्रस्तुत किया।

 तुलनात्मक विश्लेषण (Comparison):

| विषय | Company Painting | Bengal School of Art |
|---|---|---|
| कला का दृष्टिकोण | औपनिवेशिक, पर्यवेक्षक का | स्वदेशी, आत्म-निर्मित |
| 'The Other' की भूमिका | भारत को "दूसरा" दिखाना | "दूसरे" को नकारना |
| शक्ति का संतुलन | ब्रिटिश सत्ता केंद्र में | भारतीय आत्मा केंद्र में |
| सौंदर्यबोध | यथार्थवादी, डॉक्युमेंटेशन | प्रतीकात्मक, आदर्शवादी |
| उद्देश्य | उपनिवेशवादी दृष्टि से संग्रह | सांस्कृतिक पुनर्जागरण |

 निष्कर्ष (Conclusion):
Company Painting भारत को एक "दूसरे" (The Other) के रूप में प्रस्तुत करती है – ऐसा समाज जो ब्रिटिश संस्कृति के विपरीत है, हीन है, और जिसे "सभ्य" किया जाना चाहिए। इसके उलट, Bengal School of Art इस दृष्टिकोण को अस्वीकार करते हुए भारतीयता की एक स्वाभिमानी और सांस्कृतिक छवि प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार, कला उपनिवेशवाद और राष्ट्रीयता के विमर्श में एक शक्तिशाली माध्यम बन जाती है, जो "द अदर" को कभी गढ़ती है, तो कभी उससे मुक्ति दिलाती है।

**भारतीय चित्रकारों ने भारत के स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपनी कला के माध्यम से न केवल औपनिवेशिक शासन की आलोचना की, बल्कि जनता में राष्ट्रवादी भावनाओं को भी जगाया।**

**प्रमुख चित्रकारों का योगदान:**

**अवनींद्रनाथ टैगोर:**

**उन्होंने "भारत माता" चित्र बनाया, जो भारतीय राष्ट्रवाद का प्रतीक बन गया।**

**नंदलाल बोस:**

**उन्होंने महात्मा गांधी के दांडी मार्च को चित्रित किया और हरिपुरा कांग्रेस के लिए पोस्टर बनाए, जो स्वदेशी और आत्मनिर्भरता के विचारों को बढ़ावा देते थे।**

**गगनेंद्रनाथ टैगोर:**

**उन्होंने जलियांवाला बाग हत्याकांड के बाद अंग्रेजों के प्रति गुस्से को दर्शाने वाले कार्टून बनाए।**

**अमृता शेरगिल:**

**उन्होंने भारतीय समाज और संस्कृति को चित्रित करते हुए आधुनिक कला को बढ़ावा दिया।**

**कला का प्रभाव:**

**चित्रकारों ने कला के माध्यम से लोगों को एकजुट किया और स्वतंत्रता आंदोलन में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।**

**उनकी कला ने ब्रिटिश शासन की नीतियों और कार्यों की आलोचना की, जिससे लोगों में जागरूकता बढ़ी।**

**कला ने स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में काम किया, जो लोगों को प्रेरित और एकजुट करता था।**

**निष्कर्ष:**

**भारतीय चित्रकारों ने अपनी कला के माध्यम से स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने न केवल राष्ट्रवादी भावनाओं को जगाया, बल्कि लोगों को एकजुट करने और औपनिवेशिक शासन के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया।**

**)**

**परिचय (Introduction):**

**भारत का स्वतंत्रता संग्राम केवल एक राजनीतिक आंदोलन नहीं था, बल्कि यह एक सांस्कृतिक, सामाजिक और कलात्मक क्रांति भी था। इस संघर्ष में भारतीय चित्रकारों (Indian Painters) ने कला के माध्यम से जनता को जागरूक, प्रेरित और संगठित किया। उनकी कृतियों ने राष्ट्रभक्ति, आत्मसम्मान, संस्कृति और भारतीयता को चित्रित किया, जिससे जनमानस में स्वतंत्रता के प्रति चेतना जागृत हुई।**

**भारतीय चित्रकारों की भूमिका के मुख्य पक्ष:**
**1. राष्ट्रवाद की भावना को चित्रों में ढालना:**
**चित्रकारों ने भारत को एक जीवंत, शक्तिशाली और पवित्र राष्ट्र के रूप में चित्रित किया।**

**भारत माता की कल्पना – अवनींद्रनाथ ठाकुर द्वारा बनाई गई भारत माता की पेंटिंग, स्वतंत्रता संग्राम का सांस्कृतिक प्रतीक बन गई। भारत को माँ के रूप में दिखाकर, चित्रकारों ने देशभक्ति को भावनात्मक और धार्मिक भावना से जोड़ा।**

**2. भारतीय संस्कृति और इतिहास का गौरवगान:**
**चित्रकारों ने भारत के प्राचीन इतिहास, धर्म, दर्शन और सांस्कृतिक मूल्यों को पुनः जागृत किया, जिससे औपनिवेशिक सोच का विरोध किया जा सके।**

**उन्होंने मुग़ल, राजपूत, अजंता, एलोरा, और बौद्ध कला की परंपराओं को फिर से जीवंत किया।**

**यह प्रयास ब्रिटिशों द्वारा थोपी गई यूरोपीय कला शैली का सांस्कृतिक प्रतिरोध था।**

**3. औपनिवेशिक शोषण के विरोध में चित्रण:**
**कई चित्रकारों ने अपने चित्रों में ब्रिटिश दमन, भारत की पीड़ा, किसानों की दशा और देशवासियों की व्यथा को चित्रित किया।**

**ये चित्र विरोध और प्रतिरोध के दृश्य रूप बन गए।**

**चित्रों, पोस्टरों और रेखाचित्रों के ज़रिए उन्होंने आज़ादी की पुकार को जन-जन तक पहुँचाया।**

**4. स्वदेशी आंदोलन और कला का पुनर्जागरण:**
**चित्रकारों ने स्वदेशी आंदोलन को सांस्कृतिक रूप से मज़बूत किया।**

बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट ने यूरोपीय यथार्थवादी चित्रकला का त्याग कर, भारतीय शैली को अपनाया।

यह कलात्मक विद्रोह ही स्वतंत्रता संग्राम का सांस्कृतिक मोर्चा बन गया।

5. शिक्षा और विचारधारा का प्रचार:
कई चित्रकारों ने राष्ट्रीय स्कूल और कला संस्थानों की स्थापना की।

उन्होंने छात्रों को भारतीय परंपरा से जोड़कर राष्ट्रवादी दृष्टिकोण विकसित किया।

प्रमुख चित्रकार और उनका योगदान:

| चित्रकार का नाम | योगदान |
|---|---|
| अवनींद्रनाथ ठाकुर | भारत माता की रचना, बंगाल स्कूल के संस्थापक |
| नंदलाल बोस | गांधीजी की विचारधारा को चित्रों में ढाला, हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन की सजावट |
| जामिनी रॉय | लोककला शैली को अपनाकर भारतीय आत्मा को चित्रित किया |
| रवींद्रनाथ ठाकुर | साहित्य के साथ-साथ चित्रों से भी राष्ट्रवाद को प्रकट किया |
| अमरनाथ सहगल | मूर्तिकला से स्वतंत्रता संग्राम की पीड़ा और संघर्ष को दर्शाया |
| बी.सी. सरकार | स्वदेशी पोस्टर और राजनीतिक चित्रण में अग्रणी |

 नंदलाल बोस और हरिपुरा अधिवेशन (1938):
महात्मा गांधी के निर्देश पर नंदलाल बोस और उनके छात्रों ने हरिपुरा कांग्रेस अधिवेशन के लिए पेंटिंग्स बनाई, जिनमें भारतीय जीवन, ग्रामीण संस्कृति, श्रमिकों और स्वतंत्रता के प्रतीकों को दर्शाया गया। यह एक राजनीतिक मंच को सांस्कृतिक क्रांति में बदलने का एक अनुपम उदाहरण था।

 निष्कर्ष (Conclusion):
भारतीय चित्रकारों ने भारत की स्वतंत्रता संग्राम में केवल ब्रश और रंग का उपयोग नहीं किया, बल्कि कला को हथियार बना दिया। उन्होंने न केवल राजनीतिक विचारधारा को अभिव्यक्त किया, बल्कि जनभावनाओं को जागृत, सशक्त और संगठित किया। उनके चित्रों ने क्रांतिकारियों को प्रेरणा दी, आम जनता को दिशा दी और भारतीय संस्कृति को औपनिवेशिक दमन से मुक्त करने का मार्ग प्रशस्त किया।

 इस प्रकार, भारतीय चित्रकार स्वतंत्रता संग्राम के मूक सिपाही थे – जिनकी कला बोलती थी, ललकारती थी, और जगाती थी।

# UNIT-3

**भारतीय राजनीति में पोस्टरों का ऐतिहासिक विकास:**

**1. स्वतंत्रता संग्राम के दौरान:**

**पोस्टर का प्रयोग ब्रिटिश विरोधी प्रचार, स्वदेशी आंदोलन, और राष्ट्रवादी भावनाएं जगाने के लिए हुआ।**

**भारत माता, क्रांतिकारियों के चित्र, और ब्रिटिश शोषण के प्रतीकात्मक चित्रण प्रमुख थे।**

**चित्रों में संदेश छोटे होते थे, लेकिन चित्रात्मक भाषा बहुत प्रभावशाली होती थी।**

**उदाहरण:**

**"वंदे मातरम्" लिखे पोस्टर में भारत माता को सिंह पर सवार दिखाया जाता था।**

**नंदलाल बोस और बंगाल स्कूल के कलाकारों ने स्वतंत्रता आंदोलन के लिए कई प्रेरणादायक चित्र बनाए।**

**2. स्वतंत्रता के बाद और लोकतंत्र की स्थापना:**

**1950 के बाद पोस्टर राजनीतिक दलों द्वारा चुनाव प्रचार के एक प्रभावी साधन बन गए।**

**पोस्टरों के ज़रिए पार्टी का चुनाव चिन्ह, नेता का चेहरा और घोषणाएं जनता तक पहुँचाई जाती थीं।**

**पोस्टर सस्ती छपाई और रंगीन छवि के कारण ग्रामीण भारत तक भी पहुँचने में सक्षम रहे।**

**प्रमुख विषय:**

**विकास, गरीबी हटाओ, जातीय पहचान, धर्मनिरपेक्षता, जनकल्याण योजनाएँ आदि।**

**3. विरोध आंदोलनों में पोस्टरों की भूमिका:**

जेपी आंदोलन, नर्मदा बचाओ आंदोलन, दलित आंदोलन, और किसान आंदोलनों में पोस्टरों का व्यापक उपयोग हुआ।

पोस्टरों में चित्र, प्रतीक, नारे और कार्टून के माध्यम से शासन की नीतियों की आलोचना की गई।

 उदाहरण:

"अंधेरे में एक आवाज़" जैसे पोस्टर – जहाँ सरकार की दमनकारी नीतियों का प्रतीकात्मक विरोध दिखाया जाता है।

4.  आधुनिक दौर में (डिजिटल युग):
आज पोस्टर डिजिटल रूप में सोशल मीडिया, व्हाट्सएप, फेसबुक और ट्विटर पर फैलते हैं।

राजनीतिक पार्टियाँ अब डिजिटल पोस्टर, इन्फोग्राफिक्स, और मीम्स के रूप में भी प्रचार करती हैं।

चुनाव आयोग भी मतदाता जागरूकता के लिए पोस्टर और डिजिटल विजुअल का प्रयोग करता है।

 राजनीतिक पोस्टरों के प्रमुख तत्व:
तत्व भूमिका
 चित्र (Image) नेता, प्रतीक, झंडा, भारत माता, मजदूर, किसान आदि का चित्रण
 नारा (Slogan) छोटा, सीधा और भावनात्मक – जैसे "गरीबी हटाओ", "हर हाथ को काम"
 रंग (Color) रंगों का राजनीतिक प्रतीक रूप में प्रयोग (जैसे भगवा, लाल, हरा)
 प्रतीकवाद (Symbolism) तुलसी, हल, चक्र, सूरज आदि का प्रयोग – गहरे सामाजिक अर्थों के साथ

 राजनीतिक पोस्टरों के प्रभाव:
 जनमत निर्माण में सहायक

 सांस्कृतिक और विचारधारात्मक संदेश का प्रचार

 नेताओं और पार्टियों की छवि निर्माण में सहायक

 विरोध और आंदोलन का माध्यम

- साक्षरता की परवाह किए बिना जनसंपर्क का माध्यम

 चुनौतियाँ और आलोचना:
- झूठे या भ्रामक संदेश फैलाने की संभावना

- धार्मिक या जातीय उकसावे का माध्यम बन जाना

- दीवारों की अवैध पोस्टिंग, सार्वजनिक स्थानों की गंदगी

- राजनीतिक प्रचार में कला की गिरती गुणवत्ता

# UNIT-4

समकालीन कला (Contemporary art) का मतलब है वर्तमान समय में बनाई गई कला। यह आमतौर पर 20वीं सदी के मध्य से लेकर आज तक की कला को दर्शाता है, और इसमें विभिन्न प्रकार की शैलियाँ और माध्यम शामिल हैं।

समकालीन कला (Contemporary art) का मतलब है, वर्तमान समय में बनाई जा रही कला। यह 20वीं सदी के उत्तरार्ध से लेकर आज तक की कला को दर्शाता है, और इसमें विभिन्न प्रकार की कला शैलियाँ शामिल हैं, जैसे कि चित्रकला, मूर्तिकला, फोटोग्राफी, स्थापना कला, प्रदर्शन कला, और वीडियो कला. समकालीन कला, अक्सर सामाजिक और वैश्विक मुद्दों को संबोधित करती है और कलाकारों की व्यक्तिगत और सांस्कृतिक पहचान, परिवार, समुदाय, और राष्ट्रीयता जैसे विषयों पर प्रकाश डालती है

समकालीन कला की कुछ मुख्य बातें:
वर्तमान समय की कला:
समकालीन कला, वर्तमान युग से संबंधित है, जो इसे आधुनिक कला से अलग करती है.
विभिन्न माध्यम:

**इसमें विभिन्न प्रकार के कला रूप शामिल हैं, जैसे कि पेंटिंग, मूर्तिकला, फोटोग्राफी, इंस्टॉलेशन, प्रदर्शन और वीडियो कला.**

**सामाजिक और वैश्विक मुद्दे:**

**समकालीन कला, अक्सर सामाजिक और वैश्विक मुद्दों को संबोधित करती है, जैसे कि पहचान, लिंग, पर्यावरण, और राजनीति.**

**कलाकारों की व्यक्तिगत अभिव्यक्ति:**

**समकालीन कला, कलाकारों को अपनी व्यक्तिगत और सांस्कृतिक पहचान, और उनके आसपास की दुनिया के बारे में विचारों को व्यक्त करने का अवसर प्रदान करती है.**

**आधुनिक कला का मतलब हिंदी में आधुनिक कला या मॉडर्न आर्ट है। यह 19वीं सदी के अंत और 20वीं सदी की शुरुआत में उभरा एक कला आंदोलन है जो पारंपरिक कला रूपों से अलग है। इसमें प्रयोग, अमूर्तता, और व्यक्तिपरक दृष्टिकोण पर जोर दिया जाता है।**

**विस्तार में:**

**आधुनिक कला, जिसे "मॉडर्न आर्ट" भी कहा जाता है, एक व्यापक शब्द है जो 1860 के दशक से लेकर 1970 के दशक तक की कला को संदर्भित करता है। यह एक ऐसा समय था जब कलाकारों ने पारंपरिक कला रूपों और तकनीकों को चुनौती दी और नए विचारों और शैलियों के साथ प्रयोग करना शुरू किया।**

**आधुनिक कला की कुछ प्रमुख विशेषताएं हैं:**

**अमूर्तता:**

**आधुनिक कला में, कलाकार अक्सर वास्तविक वस्तुओं या दृश्यों को हूबहू चित्रित करने के बजाय, रंगों, आकृतियों और रेखाओं के माध्यम से भावनाओं और विचारों को व्यक्त करते हैं।**

**प्रयोग:**

**आधुनिक कलाकारों ने विभिन्न प्रकार की सामग्रियों, तकनीकों और शैलियों के साथ प्रयोग किया, जैसे कि प्रभाववाद, क्यूबिज्म, और अतियथार्थवाद।**

**व्यक्तिपरक दृष्टिकोण:**

**आधुनिक कला में, कलाकार अपने व्यक्तिगत अनुभवों, भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने के लिए स्वतंत्र महसूस करते हैं।**

**सामाजिक और राजनीतिक संदर्भ:**

**आधुनिक कला अक्सर सामाजिक और राजनीतिक मुद्दों पर टिप्पणी करती है और परिवर्तनकारी विचारों को बढ़ावा देती है।**

**औद्योगिक क्रांति का प्रभाव:**

औद्योगिक क्रांति के बाद, यूरोप और अमेरिका में सामाजिक, आर्थिक और तकनीकी परिवर्तन हुए, और इन परिवर्तनों ने आधुनिक कला के विकास को प्रभावित किया।
उदाहरण के लिए, प्रभाववाद, क्यूबिज्म, और अतियथार्थवाद आधुनिक कला

आधुनिक और समकालीन कला में राजनीतिक परिदृश्य/आंकड़े:
संक्षिप्त विवरण:
आधुनिक और समकालीन कला में राजनीतिक परिदृश्य और आंकड़े, कला के माध्यम से सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर टिप्पणी करते हैं। आधुनिक कला, 1860 के दशक से 1960 के दशक तक पश्चिमी कला आंदोलन से प्रभावित थी, जबकि समकालीन कला वर्तमान समय में बनाई जा रही है, जो वैश्विक और विविध संदर्भों को दर्शाती है। भारत में, राजा रवि वर्मा, Abanindranath Tagore, अमृता शेरगिल, और रवींद्रनाथ टैगोर जैसे कलाकारों ने आधुनिक और समकालीन कला में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।
विस्तार:
1. आधुनिक कला:
भारतीय संदर्भ:
आधुनिक भारतीय कला, पश्चिमी कला आंदोलनों से प्रेरित थी, लेकिन भारतीय विषयों और शैलियों को भी शामिल किया गया।
राजा रवि वर्मा:
उन्हें "आधुनिक भारतीय कला के पिता" के रूप में जाना जाता है। उन्होंने भारतीय विषयों को यूरोपीय तकनीकों के साथ चित्रित किया।
Abanindranath Tagore:
उन्होंने भारतीय और पूर्वी कला परंपराओं को पुनर्जीवित किया और वाश पेंटिंग तकनीक का विकास किया।
राष्ट्रीयता और आधुनिकता:
इन कलाकारों ने भारतीय कला में राष्ट्रीयता और आधुनिकता की भावना को बढ़ावा दिया।
2. समकालीन कला:
वैश्विक प्रभाव:
समकालीन कला, आज के कलाकारों द्वारा बनाई जाती है, जो वैश्विक, सांस्कृतिक, और तकनीकी रूप से विविध वातावरण में काम करते हैं।

**राजनीतिक और सामाजिक मुद्दे:**

**समकालीन कला, राजनीतिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक मुद्दों पर टिप्पणी करती है, जैसे कि लिंग, जाति, पर्यावरण, और मानवाधिकार।**

**भारतीय कलाकार:**

**नागसामी रामचंद्रन, जितिश Kallat, अतुल डोडिया, और गीता वाधरा जैसे कलाकारों ने समकालीन भारतीय कला में महत्वपूर्ण योगदान दिया है।**

**विभिन्न माध्यम:**

**समकालीन कलाकार, चित्रकला, मूर्तिकला, स्थापना, वीडियो, और प्रदर्शन कला सहित विभिन्न माध्यमों का उपयोग करते हैं।**

**राजनीतिक टिप्पणी:**

**कई समकालीन कलाकार, कला के माध्यम से राजनीतिक और सामाजिक अन्याय के खिलाफ आवाज उठाते हैं।**

**3. प्रमुख विषय:**

**राष्ट्रीयता:**

**राष्ट्रवाद, सांस्कृतिक पहचान, और स्वतंत्रता।**

**सामाजिक न्याय:**

**जाति, लिंग, गरीबी, और मानवाधिकार।**

**पर्यावरण:**

**प्रदूषण, जलवायु परिवर्तन, और प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण।**

**वैश्वीकरण:**

**सांस्कृतिक आदान-प्रदान, प्रवास, और वैश्विकरण का प्रभाव।**

**निष्कर्ष:**

**आधुनिक और समकालीन कला, राजनीतिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक मुद्दों पर एक शक्तिशाली टिप्पणी प्रदान करती है। ये कलाकृतियाँ, दर्शकों को सोचने, सवाल करने, और सामाजिक परिवर्तन के लिए प्रेरित करने का काम करती हैं।**

**परिचय (Introduction):**

**कला सिर्फ सौंदर्य या सजावट का साधन नहीं है — यह समाज, संस्कृति और राजनीति को दर्शाने, सवाल उठाने और बदलने का माध्यम भी है।**

**भारतीय आधुनिक और समकालीन कला में राजनीतिक विषयों और नेताओं का चित्रण न केवल ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या करता है, बल्कि वर्तमान सत्ता, असमानता और संघर्षों की आलोचना भी करता है।**

**🔹 आधुनिक और समकालीन कला में राजनीतिक परिदृश्य:**
**1. 🎨 स्वतंत्रता पूर्व कला (Modern Art: 1900–1947)**
**✦ विषय:**
**औपनिवेशिक विरोध**

**राष्ट्रवाद का उदय**

**भारत माता और स्वतंत्रता सेनानियों का चित्रण**

**✦ प्रमुख कलाकार:**
**अवनींद्रनाथ ठाकुर – भारत माता की प्रसिद्ध पेंटिंग (1905)**

**नंदलाल बोस – गांधीजी की जीवन गाथा को चित्रित किया, हरिपुरा कांग्रेस के लिए भित्ति चित्र**

**राजा रवि वर्मा – ऐतिहासिक और पौराणिक नायकों के माध्यम से भारतीय गौरव को चित्रित किया**

**✦ उद्देश्य:**
**🔹 भारतीय अस्मिता और आत्मसम्मान का जागरण**
**🔹 ब्रिटिश सत्ता के खिलाफ सांस्कृतिक चेतना**

**2. 🏛️ स्वतंत्रता के बाद की कला (1950–1980): राजनीति और जनजीवन**
**✦ विषय:**
**नवगठित लोकतंत्र की चुनौतियाँ**

**गरीबी, भुखमरी, सामाजिक असमानता**

**दलित, मजदूर, किसान आंदोलन**

**✦ प्रमुख कलाकार:**
**एम.एफ. हुसैन – गांधी, नेहरू, इंदिरा जैसे नेताओं के प्रतीकात्मक चित्रण**

**सोमनाथ होर – युद्ध, दमन और जनता की पीड़ा को उकेरा**

**के.जी. सुब्रमण्यम – राजनीति, परंपरा और आधुनिकता का मेल**

**✦ उदाहरण:**
**"राष्ट्र के निर्माता" (M.F. Hussain द्वारा – गांधीजी, टैगोर, नेहरू जैसे नेताओं को एक साथ दर्शाना)**
**"द्रौपदी" (सोमनाथ होर) – महिलाओं पर राजनीतिक हिंसा का प्रतीकात्मक चित्रण**

**3. राजनीतिक उथल-पुथल और कला (1980–2000): विरोध और विद्रोह की आवाज़**
**✦ प्रमुख घटनाएँ:**
**आपातकाल (1975–77)**

**1984 सिख दंगे**

**बाबरी विध्वंस (1992)**

**गुजरात दंगे (2002)**

**✦ प्रमुख कलाकार:**
**तायब मेहता – "त्रिशंकु", "महिषासुर" जैसी पेंटिंग्स में राजनीति और मिथक का प्रतीकात्मक मेल**

**गुलाम मोहम्मद शेख – इतिहास और समकालीन राजनीति का कलात्मक पुनर्पाठ**

**रामकिंकर बैज – मूर्तिकला में दलितों, श्रमिकों और किसानों की पीड़ा**

**✦ उद्देश्य:**
**सत्ता की आलोचना**
**धार्मिक कट्टरता और दमन का विरोध**
**मानवाधिकार और सामाजिक न्याय की पुकार**

**4. समकालीन भारतीय कला (2000 से वर्तमान): राजनीति, मीडिया और पहचान**
**✦ विषय:**
**लोकतंत्र पर खतरे**

**जातीय और धार्मिक राजनीति**

**नागरिकता, विरोध और प्रदर्शन**

**मीडिया और सेंसरशिप**

**✦ प्रमुख कलाकार:**

| कलाकार | प्रमुख विषय और कार्य |
|---|---|
| शिल्पा गुप्ता | बॉर्डर, पहचान, निगरानी, सेंसरशिप पर आधारित इंस्टॉलेशन |
| जितिश कालट | इतिहास, राजनीति और आधुनिक भारत की विसंगतियों पर व्यंग्यात्मक कला |
| सुबोध गुप्ता | रोज़मर्रा की वस्तुओं से राजनीतिक और सामाजिक असमानता का चित्रण |
| नलिनी मलानी | महिला, युद्ध, साम्प्रदायिकता और दमन – वीडियो आर्ट और परफॉर्मेंस के ज़रिए |
| चित्रा गणेश | नारीवादी और राजनीतिक दृष्टिकोण से पौराणिक पात्रों की पुनर्व्याख्या |

**🔹 राजनीतिक व्यक्तित्वों का चित्रण (Political Figures in Art):**

**🔹 गांधीजी:**

**नंदलाल बोस, हुसैन, कालट जैसे कई कलाकारों ने गांधीजी को सत्य, अहिंसा और जनशक्ति के प्रतीक के रूप में चित्रित किया।**

**🔹 नेहरू व इंदिरा गांधी:**

**विभाजन, पंचवर्षीय योजना, आपातकाल जैसे विषयों में इनकी छवियाँ सामने आती हैं – कभी आदर्शवादी, कभी विवादास्पद।**

**🔹 आधुनिक नेताओं का चित्रण:**

**समकालीन कलाकार नेताओं को सीधे चित्रित करने की बजाय प्रतीकों, व्यंग्य और आलोचना के माध्यम से दर्शाते हैं — जैसे कि मीडिया में चेहरा ढंका हुआ, या दर्पण में झूठी छवि।**

**🔹 निष्कर्ष (Conclusion):**

**आधुनिक और समकालीन भारतीय कला में राजनीतिक परिदृश्य केवल नेतृत्व की तस्वीरें नहीं, बल्कि आंदोलनों, असंतोष, विरोध, सामाजिक न्याय और नागरिक चेतना के प्रतिबिंब हैं। कलाकारों ने सत्ता की प्रशंसा से अधिक प्रश्न और आलोचना को अपनी रचना का हिस्सा बनाया है।**

**इस तरह, भारतीय कला लोकतंत्र की आत्मा बन गई है — जो बोलती नहीं, चिल्लाती है; जो चुप नहीं, चेतावनी देती है**